बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-130 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अप्रैल 2025 | मूल्य - 5 रूपए

इंटरनेशनल स्ट्रीट चिल्ड्रेन डे पर 'स्ट्रीट चैंप्स' टूर्नामेंट के जरिए

बच्चों ने मनाया बाल अधिकार, भागीदारी और नेतृत्व का जश्न

बालकनामा रिपोर्टर किशन

हर वर्ष 12 अप्रैल को इंटरनेशनल स्ट्रीट चिल्ड्रेन डे (सड़क पर रहने वाले बच्चों के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस) मनाया जाता है, जो बच्चों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने और उनके जीवन में भागीदारी एवं नेतृत्व को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित किया जाता है। इस वर्ष चेतना संस्था द्वारा इस दिवस को खास बनाने के लिए 'स्ट्रीट चैंप्स' खेल महोत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें 500 से अधिक बाल साथियों ने भाग लिया। यह आयोजन पूर्वी दिल्ली के विनोद नगर मैदान में भारतीय पारंपरिक खेलों पर आधारित था जिसमें कबड्डी और खो-खो जैसे पारंपरिक खेलों के जरिए बाल प्रतिभाओं को खुलकर सामने आने और नेतृत्व विकसित करने का अवसर मिला। बच्चों ने न केवल टीम के नाम तय किए, रणनीति बनाई, बल्कि टीम नेतृत्व, नियमों की समझ और निर्णय लेने जैसे अहम भूमिकाएं भी निभाईं। इस आयोजन ने बच्चों को

केवल खेल में भाग लेने का मौका ही नहीं दिया, बल्कि उन्हें नेतृत्व, संवाद, सामूहिक निर्णय, आत्म-अभिव्यक्ति, टीमवर्क और समानता जैसे जीवन के मूल मूल्यों को अनुभव करने का मंच भी प्रदान किया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य बच्चों की भागीदारी और निर्णय क्षमता को बढ़ावा देना था, जो इस वर्ष की अंतर्राष्ट्रीय थीम झ "बच्चों की भागीदारी और निर्णय प्रक्रिया में नेतृत्व" से प्रेरित था। इस कार्यक्रम में विभिन्न शहरों जैसे पश्चिमी दिल्ली, नोएडा, ग्रेटर नोएडा, जयपुर और गुरुग्राम के बाल साथियों ने भागीदारी की। खेल के दौरान 'धूम,' 'छुपा रुस्तम,' 'गली स्मार्ट,' 'पैंथर,' 'उड़ान,' 'अवेंजर्स' जैसी टीम समूहों ने खेल के मैदान में अपना दमखम दिखाया, जहाँ जूनियर और सीनियर वर्ग में लड़के और लड़कियाँ दोनों ने बिना किसी लिंगभेद के समान रूप से भागीदारी की। हर टीम को दो बार खेलने का मौका दिया गया जिससे बच्चों में आत्मविश्वास और खेल भावना का संचार हुआ। जब बाल साथी अपनी मेहनत और एकजुटता के बल पर फाइनल तक पहुंचे और जीत हासिल की, तो यह जीत सिर्फ एक खेल की नहीं अपितु उनके आत्मबल, आत्मनिर्भरता और नेतृत्व की जीत भी

शेष पृष्ठ 2 पर

गंदगी और बदबू से जूझते बच्चे, कब मिलेगा साफ-सुथरा माहौल ?

बातूनी रिपोर्टर अली व रिपोर्टर किशन

बालकनामा पत्रकारों ने जब विभिन्न राज्यों और स्थानों का दौरा किया, तो उन्होंने सड़क और कामकाजी बच्चों की बस्तियों के आसपास गंदगी और कूड़े-कबाड़ के बड़े ढेर देखे। इनमें से अधिकतर जगहों पर इतनी बदबू थी कि बच्चों को रोजाना इसका सामना करना पड़ता है। नोएडा की एक बस्ती में रहने वाली 13 साल की एक बालिका नेहा (परिवर्तित नाम) ने इस समस्या को विस्तार से बताया। उसने कहा, "जहां हम रहते हैं, वहां करीब डेढ़ सौ से ज्यादा झुग्गियां हैं, और इन झुग्गियों के आगे ढेर सारा कूड़ा जमा

हो जाता है। यह कूड़ा खुद बस्ती के लोग ही फेंकते हैं।" उसने आगे बताया कि इस कूड़े की वजह से रास्तों पर चलना मुश्किल हो जाता है, हर वक्त तेज बदबू आती है, और इसी वजह से बस्ती के कई बच्चे बीमार पड़ रहे हैं। लोग अपने घरों का गंदा पानी और बचा हुआ खाना भी इसी कूड़े के ढेर में डाल देते हैं, जिससे हालात और बिगड़ जाते हैं। बस्ती के लोगों ने कई बार ठेकेदार से सफाई करवाने की मांग की, लेकिन वह सिर्फ हां कर देता है और कोई कार्रवाई नहीं करता। इस लापरवाही की वजह से बस्ती के बच्चों को इस गंदगी में रहने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है।

बस्ती के बच्चों ने पुलिस के साथ मनाई होली की खुशियां

बालकनामा रिपोर्टर: दामिनी
बातूनी रिपोर्टर: साक्षी

बालकनामा रिपोर्टर दामिनी ने जयपुर की जयसिंहपुरा खोर बस्ती का दौरा किया और वहां के बच्चों से होली के त्योंहार पर उनके अनुभवों को जानने का प्रयास किया। बातूनी रिपोर्टर साक्षी ने उत्साह से बताया कि होली का त्योंहार बस्ती के बच्चों के लिए एक नई और अनोखी खुशी का प्रतीक है। इस बार, पहली बार उन्होंने होली का पर्व नजदीकी पुलिस स्टेशन जाकर पुलिस अधिकारियों के साथ मनाया। शुरूआत में बच्चों के मन में झिझक थी। वे सोच रहे थे कि पुलिसवालों को गुलाल या रंग लगाना ठीक रहेगा

या नहीं। लेकिन हिम्मत जुटाकर जब वे थाने पहुंचे और पुलिस अधिकारियों से उनके साथ होली खेलने का निवेदन किया, तो पुलिस अधिकारी बहुत खुश हुए। उन्होंने खुद पहल करते हुए बच्चों के गालों पर गुलाल लगाया और कहा, "हमारे लिए यह बहुत खास मौका है। हमें बच्चों के साथ होली मनाकर बहुत खुशी हो रही है।"बालक जयदेव ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा, "पहले मुझे पुलिस से डर लगता था, लेकिन अब ऐसा लगता है कि पुलिस भी हमारी खुशियों में शामिल होती है और हमारी सुरक्षा के लिए होती है।" इस रंग भरे त्योंहार ने बच्चों और पुलिस के रिश्ते में एक नई दोस्ती का एहसास दिलाया। इस अवसर पर पुलिस अधिकारी त्रिलोक जी ने भी अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। उन्होंने कहा, "ये बच्चे भी खुशियां मनाने के हकदार हैं, और जब हम इनकी खुशियों का हिस्सा बनते हैं, तो यह हमारे लिए एक सुनहरा अवसर होता है। जब बच्चे हमारे साथ त्योंहार मनाते हैं, तो उनका डर और झिझक दूर होती है, और पुलिस और बच्चों के बीच एक अच्छा संबंध बनता है।" इस पहल ने न सिर्फ पुलिसकर्मियों का दिल छू लिया बल्कि बच्चों का पुलिस के प्रति नजरिया भी बदल दिया। अब वे पुलिस को केवल सुरक्षा का प्रतीक नहीं, बल्कि अपने मित्र और साथी के रूप में देखने लगे हैं। यह साबित करता है कि जब समाज के हर वर्ग को समानता और प्यार मिलता है, तो रिश्तों में विश्वास और मित्रता की भावना और भी मजबूत होती है।

बच्चों ने मनाया बाल अधिकार, भागीदारी और नेतृत्व का जश्न

पृष्ठ 1 का शेष

थी। मैदान में उपस्थित बाल पत्रकारों ने भी रिपोर्टिंग कर अपनी आवाज को बुलंद किया और भाग लेने वाले बच्चों के अनुभवों को दुनिया तक पहुँचाया। शाहिद, सानिया, असलम, दिलीप और राम जैसे कई बच्चों ने बताया कि कैसे उन्हें इस आयोजन में भाग लेने का मौका मिला, कैसे उन्होंने अपनी टीम को संभाला, और किस तरह यह अनुभव उनके जीवन की पहली बड़ी जीत बन गया। कई बच्चों ने बताया कि उन्हें पहली बार खेलने का अवसर मिला और टीम की जीत को वे अपने जीवन की पहली सबसे बड़ी उपलब्धि मानते हैं। कार्यक्रम में अंत में विजेता टीमों को ट्रॉफी और मेडल से सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में बाल साथियों का ढोल-नगाड़ों के साथ स्वागत, सभी टीम के प्रेरक एवं रोचक नाम और बच्चों की चमकती आंखों से साफ झलक रहा था कि यह आयोजन उनके लिए केवल खेल नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और समानता का उत्सव था।

इस अवसर पर आयोजित खेल महोत्सव के दौरान "छोटू और शेराः बाल अधिकारों के रक्षक" नामक विशेष कॉमिक पुस्तक का विमोचन किया गया। यह कॉमिक पुस्तक सड़क और कामकाजी बच्चों को ध्यान में रखते हुए बनाई गई है, ताकि वे अपने अधिकारों को सरल और रोचक तरीके से समझ सकें। अक्सर देखा गया है कि छोटे बच्चों के हाथ में जो पुस्तकें आती हैं, वे कठिन शब्दों और भारी भाषा से भरी होती हैं, जिन्हें समझना उनके लिए मुश्किल होता है। इसी चुनौती को ध्यान में रखते हुए "छोटू और शेरा" कॉमिक बनाई गई है। इस पुस्तक में बच्चों के अधिकारों, बाल विवाह, बाल मजदूरी एवं बच्चों से सम्बंधित कानूनों को कार्टून पात्रों के माध्यम से जीवंत और मजेदार तरीके से प्रस्तुत किया गया है। छोटू और शेरा दो ऐसे पात्र हैं जो बच्चों की दुनिया के बहुत करीब हैं। ये पात्र कहानियों के माध्यम से बच्चों को यह सिखाते हैं कि कैसे वे अपने अधिकारों को पहचान सकते हैं, उनका उपयोग कर सकते हैं, और यदि कोई उन्हें इन अधिकारों से वंचित करता है, तो कैसे उसका सामना कर सकते हैं। इस पुस्तक को लॉन्च करने का मुख्य उद्देश्य यही था कि सड़क और कामकाजी बच्चों तक अधिकारों की जानकारी सरल और मनोरंजक ढंग से पहुंचाई जा सके। छोटू और शेरा कॉमिक का विमोचन खेल महोत्सव में भाग ले रहे सैकड़ों बच्चों के बीच किया गया, ताकि अधिक से अधिक बच्चों तक यह ज्ञान पहुंचे और वे अपने जीवन में बदलाव ला सकें। इस पहल के माध्यम से चेतना संस्था ने एक रचनात्मक प्रयास किया है कि शिक्षा और जागरूकता केवल किताबों और कक्षा तक सीमित न रहें, बल्कि बच्चों की रुचि और समझ के अनुसार उन्हें सशक्त बनाने का माध्यम बनें।

इस दिन सड़क और कामकाजी बच्चों ने विभिन्न खेलों में भाग लिया, और इस प्रकार इस आयोजन के दौरान चेतना संस्था ने बच्चों के अधिकारों पर आधारित "बच्चों के हैं चार अधिकार" गीत भी लॉन्च किया। इस गीत का मुख्य उद्देश्य बच्चों को उनके चार प्रमुख अधिकारों के बारे में जागरूक करना है। यह गीत बच्चों के लिए एक आसान, सृजनात्मक और संगीतमय तरीका है, जिससे वे आसानी से समझ सकें कि उनके पास अधिकार हैं और वे इन अधिकारों के हकदार हैं।

खासकर उन बच्चों के लिए यह गीत तैयार किया गया है जो समाज के हाशिये पर हैं, जैसे सड़क पर रहने वाले, कामकाजी या बाल श्रमिक बच्चे, ताकि वे अपने अधिकारों को समझ सकें और उनका पालन कर सकें। इस गीत को इस तरह से रचा गया है कि यह न केवल बच्चों को आकर्षित करता है बल्कि उन्हें उनके अधिकारों की जानकारी भी देता है। इसमें कोई उपदेश नहीं है, बल्कि यह बच्चों को सहजता से उनके अधिकारों के बारे में बताने का एक मनोरंजक और प्रभावी तरीका है। गीत के माध्यम से बच्चों को उनके अधिकारों का अहसास होता है, जिससे वे शोषण और शारीरिक दंड से बच सकते हैं और शिक्षा के अधिकार को समझ सकते हैं। यह बच्चों को सशक्त करता है, जिससे वे अपनी आवाज उठा सकें और समाज में अपनी भूमिका को समझ सकें।

यह गीत भविष्य में स्कूलों, सामुदायिक सभाओं, शिक्षा केंद्रों और बाल पंचायतों में प्रस्तुत किया जाएगा, साथ ही सोशल मीडिया और अन्य प्लेटफार्म्स के जरिए इसे और अधिक बच्चों तक पहुँचाने का प्रयास किया जाएगा। इस गीत का उद्देश्य न केवल बच्चों को जागरूक करना है, बल्कि उन्हें यह एहसास दिलाना है कि वे समाज के महत्वपूर्ण सदस्य हैं और उनके पास समान अधिकार हैं।

इस अवसर पर 'स्ट्रीट टॉक' का आयोजन किया गया, जो एक ऐसा मंच था, जहाँ सड़क और कामकाजी बच्चों ने बेझिजक और खुले तौर पर अपनी बात रखी।

पश्चिम दिल्ली के 11 वर्षीय आमिर ने बताया कि वह अब आठवीं कक्षा में पढ़ाई कर रहे हैं और चेतना संस्था की मदद से उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव आया है।" 13 वर्षीय देवी ने भावुक होते हुए कहा, "जीवन में मुश्किलें आती हैं, लेकिन जो उनका सामना करता है, वही मजबूत होता है। अब मैं स्कूल जाती हूं और माँ के साथ चाय की दुकान पर भी मदद करती हूं।"

इस मंच के जरिए बच्चों ने यह साझा किया कि वे समाज की मुख्यधारा में आने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। उनकी दुनिया सिर्फ सड़कें और कामकाजी हालात नहीं हैं, बल्कि उनकी ख्वाहिशें, सपने और अधिकार भी हैं। वे खुद को बेहतर बनाने के लिए हर दिन नए तरीके तलाश रहे हैं और अपनी शिक्षा, खेल, और सर्वांगीण विकास की ओर अग्रसर हो रहे हैं। 'स्ट्रीट टॉक' के मंच से इन बच्चों को अपनी आवाज उठाने का मौका मिलता है और वे जान सकते है कि उनके पास भी अधिकार हैं। यह मंच उनके लिए सिर्फ एक अवसर नहीं, बल्कि एक बदलाव का रूप है, जिसमें वे अपनी समस्याओं को सामने रख सकते हैं और अपनी उम्मीदें और ख्वाब दूसरों तक पहुँचा सकते हैं। बच्चों ने अपने अनुभव, संघर्ष और सपनों को इस मंच पर साझा किया, और इसने न केवल समाज को इनकी स्थिति की गंभीरता से अवगत कराया, बल्कि बच्चों में यह विश्वास भी जगाया कि वे किसी भी बदलाव के भागीदार हो सकते हैं। एक बच्चे ने कहा, "हमारे पास ख्वाब हैं, लेकिन हमें सिर्फ एक सहारा चाहिए," और यह बात पूरी तरह से सच है। यह सिर्फ उनके दुःख और संघर्ष नहीं था, बल्कि उनकी उम्मीद और आत्मविश्वास भी था, जो वे अपनी जिंदगी को बेहतर बनाने के लिए हर दिन जीते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय बाल दिवस के अवसर पर आयोजित खेल टूर्नामेंट में भाग लेने आए विभिन्न स्थानों के बच्चों ने बालकनामा पत्रकारों से अपने अनुभव साझा किए। फाइनल मैच से पहले बाल पत्रकारों ने प्रतिभागी और दर्शक बच्चों से बातचीत कर उनके विचारों को जाना।

पश्चिम दिल्ली से आए 15 वर्षीय असलम (परिवर्तित नाम) ने खुशी जाहिर करते हुए कहा, "आज अंतर्राष्ट्रीय दिवस है, जो बच्चों के लिए मनाया जाता है। इस मैदान में अलग-अलग राज्यों से बच्चे खेलने आए हैं, और मुझे चेतना संस्था के कार्यकर्ता यहाँ खेलने के लिए लाए। हमने कबड्डी के दो मुकाबले जीते और अब हम फाइनल में हैं। हम पूरी लगन और टीम भावना के साथ खेल रहे हैं और अब यही प्रार्थना है कि हम फाइनल भी जीत जाएं।"

गुरुग्राम से आए 14 वर्षीय शाहिद ने बताया कि उन्हें चेतना संस्था ने खेल के लिए चुना क्योंकि वह पहले से ही स्कूल और ट्यूशन के बाद कबड्डी खेलते थे। उन्होंने कहा, "जब हमें टूनार्मेंट के बारे में पता चला तो हमने खुद पहल की। हमें डर नहीं लगा क्योंकि हमने पहले से अभ्यास किया था और हमें बहादुरी से खेलना आता है।" वहीं, 10 वर्षीय सानिया ने कहा, "जीवन की पहचान शिक्षा है और देश की शान हमारा खेल है। जब हम फाइनल में पहुंचे तो माता-पिता भी बहुत खुश हुए।"

नोएडा से आए 11 वर्षीय दिलीप ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि वह खो-खो के लिए तैयार थे लेकिन टीम में बदलाव के चलते कबड्डी खेलना पड़ा। उन्होंने कहा, "हमने कभी सोचा नहीं था कि जीत के बाद ट्रॉफी और मेडल मिलेंगे। यह हमारे जीवन की पहली बड़ी खुशी थी और जब हमने यह घर जाकर बताया, तो सब बहुत खुश हुए।"

नोएडा सेक्टर 115 से आए 12 वर्षीय राम, जो खो-खो जूनियर टीम के कप्तान थे, ने बताया कि शुरूआत में टीम फाउल कर रही थी, लेकिन उन्होंने टीम को समझाया और अंत में जीत दर्ज की। "कप्तान का काम होता है टीम को सही राह दिखाना, और जब हमारी टीम ने मेरी बात मानी तो हम जीत पाए। यह जीत हमारे लिए बहुत मायने रखती है।"

दर्शक बच्चों का उत्साह भी कम नहीं था। पश्चिम दिल्ली के कार्तिक ने कहा, "हम मैदान में नहीं तो क्या, हमारे साथी तो हैं। हम तालियाँ बजाकर उनका उत्साह बढ़ा रहे हैं। यह खेल चेतना संस्था द्वारा आयोजित किया गया है, और यहाँ किसी जेंडर के आधार पर भेद नहीं किया गया, जो सबसे अच्छी बात है।"

इस आयोजन ने बच्चों को खेलने का अवसर प्रदान करने के साथ-साथ उनके नेतृत्व, मित्रता और आत्मविश्वास को भी प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम के अंत में सभी बच्चों ने नए दोस्तों के साथ खुशी-खुशी तस्वीरें खिंचवाईं और अपने समुदायों की ओर मुस्कुराते हुए रवाना हुए। इस प्रकार यह आयोजन बाल सहभागिता से संपन्न हुआ एवं विभिन्न खेलों के साथ आत्मसम्मान और अधिकारों के प्रति जागरूकता का एक सुंदर उत्सव बन गया।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

खौफ के साए में बचपन, रेलवे पटरी के पास नशेड़ियों का आतंक

ब्यूरो रिपोर्ट

राजधानी दिल्ली में आज भी कुछ नशेड़ी बदमाश दिनदहाड़े बच्चों और बड़ों से लूटपाट करते हैं। सवाल यह उठता है कि क्या उस वक्त आसपास कोई व्यक्ति या पुलिस नहीं होती? इस विषय को समझने के लिए बालकनामा पत्रकारों ने मौके पर जाकर वहां के बच्चों से बात की। बच्चों ने अपनी आपबीती सुनाई, जो किसी भी इंसान को झकझोर कर रख दे। बस्ती में रहने वाली 15 साल की एक बालिका सुनैना (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उनकी बस्ती के ठीक बगल में रेलवे पटरी है। हर पांच मिनट में वहां से ट्रेन गुजरती है, लेकिन कई बार ट्रेनें घंटों तक खड़ी रहती हैं। किसी को यह नहीं पता होता कि ट्रेन कब चलेगी। इसी पटरी के पास कई खाली मैदान हैं, जहां नशेड़ी इकट्ठा होकर तरह-तरह के नशे करते हैं। जब बच्चे या बड़े इस रास्ते से गुजरते हैं, तो उनके दिल में हमेशा डर बना रहता है। सबसे ज्यादा खौफनाक हालात तब बनते हैं जब कोई व्यक्ति या बच्चा पटरी के बीच में होता है और दोनों ओर से ट्रेनें आ-जा रही होती हैं। यही मौका देखकर नशेड़ी हमला कर देते हैं। वे मोबाइल, पैसे और जो भी कीमती सामान होता

है, उसे छीन लेते हैं। जो विरोध करता है, उन पर ब्लेड या धारदार चीजों से हमला कर देते हैं। कई बार ये लुटेरे भाग जाते हैं, लेकिन जब पकड़े भी जाते हैं, तो उनके गैंग के लोग उन्हें बचा लेते हैं। और अगर कभी पुलिस पकड़ भी लेती है, तो वे अपने संपर्कों के जरिए छूट जाते हैं। बच्चों ने बताया कि रेलवे पटरी पर खड़ी ट्रेनों के कारण उन्हें हमेशा परेशानी होती है। कई बार जब बच्चे पटरी पार करने की कोशिश करते हैं, तो अचानक ट्रेन चल पड़ती है। इससे कई बार हादसे हुए हैं, जिसमें कुछ लोग अपनी जान गंवा चुके हैं, जबकि कई बच्चे बाल-बाल बचे हैं।

खंडहर बनते आवास, देख बच्चे हुए निराश

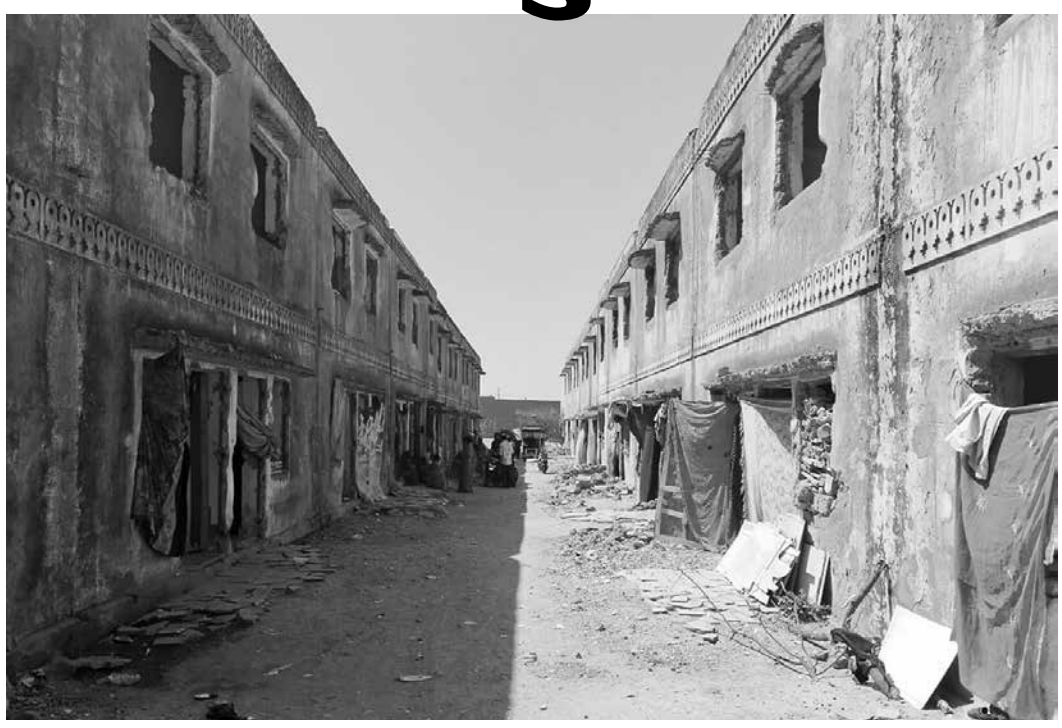

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः रणवीर

यह सरकार की जिम्मेदारी होती है कि वह बच्चों, वयस्कों, बुजुर्गों और समाज के हर पिछड़े तबके के लिए योजनाएँ बनाए और उन्हें सही तरीके से लागू करे, ताकि वंचित वर्ग को राहत मिल सके। लेकिन कई बार देखा गया है कि आवासीय योजनाएँ बिना निगरानी के खंडहर में तब्दील हो जाती हैं। जयपुर की जेडीए बापू बस्ती से 09 गुजराती परिवारों को किशनबाग में आवास मिले, लेकिन उन्हें न कोई दस्तावेज दिया गया और न ही कोई निर्देश। वे लोग बस किसी तरह वहां रहने लगे, क्योंकि उनके पास छत का कोई और विकल्प नहीं था। लेकिन व्यवस्थित आवास, सुरक्षा, सफाई और प्रबंधन जैसी जरूरी चीजों की वहाँ कोई व्यवस्था नहीं थी। इन आवासों में करीब 200 परिवार रहते हैं, जिनमें 300 से अधिक बच्चे ऐसे हैं जो स्कूल नहीं जाते। हालात इतने खराब हैं कि घरों के दरवाजे तक नहीं हैं, चारों ओर जंगल फैला हुआ है, बिजली और पानी का कोई इंतजाम नहीं है। लोग दीये और मोमबत्तियों के सहारे रातें गुजारते हैं।यहाँ के बच्चे पास के डंपयार्ड से कबाड़ बीनते हैं, लोहा उठाते हैं और गुजराती समुदाय के ज्यादातर बच्चे फेरी पर जाने या फिर स्थानीय खेलों में खुद को व्यस्त रखने को मजबूर हैं। सरकार भले ही इन लोगों को छत देने के लिए आवास बना देती है, लेकिन बीच में प्रबंधन की कमी, लापरवाही और चूक के कारण हर घर खंडहर बन गया। दरवाजे चोरी कर लिए गए, टाइल्स और लोहे का सामान भी गायब कर दिया गया। जो पत्थर की दीवारें बची हैं, वो सिर्फ इसलिए क्योंकि उन्हें ले जाया नहीं जा सका। पास में ही गार्डन, खेल का मैदान और स्कूल की जगह एक बड़ा कचरा घर बन चुका है, जिससे बच्चों को खेलने के बजाय कबाड़ बीनने का काम मिलता है। 13 वर्षीय काजल बताती है, "हम जेडीए बस्ती में 2000 रुपये किराए पर रहते थे। जब हमें यहाँ घर मिलने की खबर मिली तो बहुत खुशी हुई कि अब किराया नहीं देना पड़ेगा और अपना घर होगा। लेकिन जब यहाँ आए, तो देखा कि चारों ओर कचरा, टूटे हुए घर और बिना बिजली-पानी की स्थिति है। पहले की बस्ती ही ज्यादा ठीक थी, बस फर्क यह है कि यहाँ किराया नहीं देना पड़ता।" कुछ अभिभावक फिर भी अपने बच्चों को दूर के विद्यालयों में भेजने की कोशिश कर रहे हैं। 12 वर्षीय रणवीर कहता है, "हम यहाँ खेलते हैं, कचरे के ढेर से काम की चीजें उठाकर बेच देते हैं।" तकरीबन 300 से ज्यादा बच्चे इन खंडहर हो चुके आवासों में बिना स्कूल, पानी, बिजली, सुरक्षा और सफाई के रहने को मजबूर हैं। इन घरों की हालत देखकर ऐसा लगता है कि सरकार ने इन्हें बस आश्रय देने के लिए बनाया और फिर खुद ही इन्हें बेसहारा छोड़ दिया। इन आवासों के बाहर बच्चे फिर भी खेलते हुए नजर आते हैं। उनके लिए पलायन, पुनर्वास, सरकार, योजना जैसे शब्द कोई मायने नहीं रखते। उनके लिए असली ज़िंदगी वही है जहाँ उन्हें खाना मिल जाए, कुछ पैसे हों, और परिवार या दोस्त हों। उनके लिए हर जगह एक नया आवासीय आशियां बन ही जाता है।

गुस्से में पिता ने झुग्गी में लगाई आग, बस्ती वालों ने समय रहते बचाया

बालकनामा रिपोर्टरः दामिनी
बातूनी रिपोर्टरः रिया

बालकनामा रिपोर्टर दामिनी ने जयपुर की कई कच्ची बस्तियों का दौरा किया। प्रेमनगर की कच्ची बस्ती में उनकी मुलाकात 12 वर्षीय दीया (परिवर्तित नाम) से हुई। दीया ने बताया कि कुछ दिन पहले उसके घर में एक बड़ा हादसा होते-होते बचा। दीया ने उदासी भरे स्वर में कहा, "चार दिन पहले रात को बहुत डरावना मंजर था। मेरे पिता ने बहुत ज्यादा शराब पी रखी थी। किसी बात पर माता-पिता में झगड़ा हो गया। पापा इतने गुस्से में थे कि उन्होंने हमारी झुग्गी में ही आग लगा दी।" जैसे ही आग लगी, बस्ती के लोग इकट्ठा हो गए और समय रहते आग बुझा दी। "अगर आग फैल जाती, तो न जाने कितनी झुग्गियां जल जातीं, न जाने कितने लोग बेघर हो जाते," दीया ने कांपती आवाज में कहा। आग तो बुझ गई, लेकिन उनका कुछ सामान और बिस्तर जलकर राख हो गया। दीया की आंखों में दर्द साफ झलक रहा था। उसने बताया कि उसके पिता रोज शराब पीते हैं और अक्सर मां से झगड़ा करते हैं। "घर का माहौल कभी भी अच्छा नहीं रहता। कई बार हमें खाना तक नहीं मिलता और भूखे सोना पड़ता है," उसने मायूस होकर कहा। उसके पिता का नशे में धुत होकर गाली देना और मारपीट करना उसके लिए सबसे ज्यादा तकलीफदेह है। आखिर में दीया ने एक उम्मीद भरी बात कही, "काश! मेरे पापा नशा करना छोड़ दें। काश! वे हमें प्यार और आदर से रखें, ताकि हमारा घर भी बाकी लोगों की तरह खुशहाल हो सके।"

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बालश्रम के बावजूद शिक्षा के प्रति संकल्पित हर्षा, अपने भविष्य को संवारने की कर रही है तैयारी

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः वर्षा

बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने जयपुर की कली का भट्टा कच्ची बस्ती का दौरा किया, जहां उन्होंने बच्चों से उनके परिवार, शिक्षा और जीवन की चुनौतियों के बारे में जानने की कोशिश की। इसी दौरान उन्हें एक प्रेरणादायक खबर पता चली जो कक्षा 6 में पढ़ने वाली 13 वर्षीय बालिका हर्षा (परिवर्तित नाम) की कहानी बयां करती है। हर्षा न केवल अपनी पढ़ाई को महत्व देती है, बल्कि परिवार की आर्थिक मदद करने और अपने छोटे-छोटे शौक पूरे करने के लिए भी काम करती है। वह हर रोज नियमित रूप से स्कूल जाती है और पढ़ाई में भी अच्छी है। उसकी मेहनत और लगन का अंदाजा इसी बात से लगाया जा

सकता है कि वह सभी कठिनाइयों के बावजूद अपने शिक्षकों की हर बात ध्यान से सुनती है और समय पर अपना होमवर्क पूरा करती है।

उसका सपना है कि वह एक सफल इंसान बने और अपने परिवार की स्थिति को बेहतर बनाए। स्कूल से लौटने के बाद और छुट्टियों के दौरान, हर्षा कपड़ों और लहंगों पर सितारे चिपकाने का काम करती है, जिससे वह रोज 50 से 70 रुपये कमा लेती है। यह छोटी-सी आय उसके परिवार के लिए एक सहयोग बन जाती है। छोटी उम्र में ही उसने समझ लिया है कि आत्मनिर्भर बनना जरूरी है, इसलिए वह अपने छोटे-मोटे खर्चे जैसे त्योंहारों पर कपड़े लाना या पढ़ाई से जुड़ी जरूरी चीजें खरीदना खुद ही मैनेज करने की कोशिश करती है। हालांकि, पढ़ाई और काम को एक साथ संभालना आसान नहीं होता, लेकिन हर्षा अपने समय का सही प्रबंधन करती है। वह पहले स्कूल जाती है, फिर घर आकर होमवर्क पूरा करती है, और फिर अपने काम में लग जाती है।

उसका मानना है कि यदि दृढ़ निश्चय और मेहनत की जाए, तो किसी भी मुश्किल को पार किया जा सकता है। हर्षा की कहानी समाज के लिए एक प्रेरणा है। जहां कई बच्चे शिक्षा से दूर होते जा रहे हैं, वहीं वर्षा जैसी बालिकाएँ कठिनाइयों का सामना करते हुए भी अपने सपनों की ओर बढ़ रही हैं। यह सरकार और समाज की जिम्मेदारी है कि वे ऐसे बच्चों को सहायता प्रदान करें, ताकि वे बिना किसी रुकावट के अपनी पढ़ाई पूरी कर सकें और अपने भविष्य को संवार सकें।

क्या कुत्तों के बच्चों के साथ खेलना हो सकता है सेहत के लिए खतरनाक?

बातूनी रिपोर्टर रणवीर व रिपोर्टर किशन

बच्चे चाहे इंसानों के हों या जानवरों के, सभी को प्यारे लगते हैं और उन्हें खिलाने का मन करता है। हम यहां खासतौर पर जानवरों के बच्चों की बात कर रहे हैं। अक्सर गली-मोहल्लों में छोटे-छोटे कुत्ते नजर आते हैं, जो अपनी मासूमियत से सबका ध्यान आकर्षित करते हैं। जब ये छोटे होते हैं, तो बहुत प्यारे लगते हैं और बच्चों का मन उनके साथ खेलने को करता है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि इनके साथ खेलने से कोई समस्या हो सकती है? नोएडा के एक इलाके में, पत्रकारों की मुलाकात 14 साल के एक बालक अहमद (परिवर्तित नाम) से हुई। उसके चेहरे पर कई दाग थे, जो देखने में अजीब लग रहे थे। जब उससे इसकी वजह पूछी गई, तो उसने विस्तार से बताया कि वह अपने माता-पिता के साथ किराए के मकान में रहता है। उसके आसपास कई कुत्ते और उनके छोटे-छोटे बच्चे हैं। ये कुत्ते रात में उनके घर और आस-पास की जगहों की रक्षा भी करते हैं। बच्चे अक्सर इन छोटे पिल्लों के साथ खेलते हैं, उनके साथ दौड़ते हैं, गेंद से खेलते हैं और उन्हें गोद में उठाकर प्यार करते हैं। कुछ पिल्ले इतने प्यारे और साफ-सुथरे होते हैं कि बच्चे उनके गले लग जाते हैं और वे खेल-खेल में उनके चेहरे को चाटने लगते हैं। उस समय तो यह सब अच्छा लगता है, लेकिन बाद में इसका असर दिखने लगता है। उस बच्चे ने बताया कि ज्यादा कुत्तों के बच्चों को खिलाने और उनके करीब रहने से उसे कई दिक्कतें हुईं। उसके चेहरे पर दाने

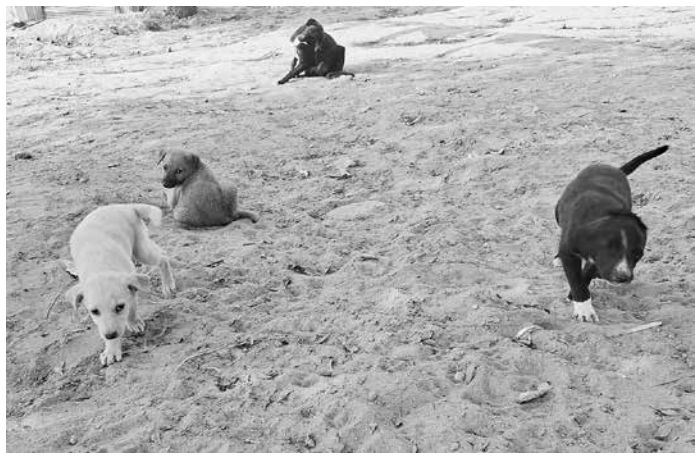

हो गए, शरीर में खुजली होने लगी और आंखें बंद करने पर चक्कर आने लगे। इन परेशानियों से वह रोज जूझता है, लेकिन अब उसने पिल्लों से दूरी बना ली है। वहीं, बगल में मौजूद 15 साल के एक अन्य बालक चेतन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि यह समस्या सिर्फ एक बच्चे की नहीं है, बल्कि बस्ती के कई बच्चे कुत्तों के साथ खेलते हैं। उनका कहना है कि ये कुत्ते उन्हें काटते नहीं हैं, क्योंकि वे उन्हें सालों से जानते हैं। लेकिन बस्ती में मौजूद बड़े कुत्ते अक्सर गंदगी में घूमते हैं, नालों में पड़े रहते हैं और फिर भी बच्चे उनके साथ खेलते हैं। सबसे बड़ी समस्या यह है कि खेलने के बाद अधिकतर बच्चे बिना साबुन से हाथ धोए खाना खा लेते हैं। वे बस सादे पानी से हाथ धोकर ही भोजन कर लेते हैं। इसी वजह से कई बच्चे बीमार पड़ रहे हैं और बार-बार स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना कर रहे हैं। यह एक छोटी-सी आदत है, लेकिन इसका असर बड़ा हो सकता है। कुत्तों से प्यार करना और उनके साथ खेलना गलत नहीं है, लेकिन सफाई का ध्यान रखना और स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना भी जरूरी है।

नशे के लिए बच्चे अपना रहे हैं नए-नए तरीके

ब्यूरो रिपोर्ट

यह हर किसी को अच्छा लगता है कि वह अपने शौक पूरे करे, लेकिन क्या अपने शौक पूरे करने के दौरान दूसरों को नुकसान पहुंचाना सही है? हमारे आसपास कई छोटे-बड़े बच्चे नशे के जाल में फंसते जा रहे हैं। लेकिन वे किस हद तक पहुंच चुके हैं और कौन-कौन से नशीले पदार्थों का सेवन कर रहे हैं, यह जानना बेहद जरूरी है। नोएडा के एक पार्क में पत्रकारों ने दौरा किया और वहां मौजूद बच्चों से बातचीत करने की कोशिश की। एक-एक करके बच्चों ने अपनी कहानियां साझा कीं। इस पार्क में रोजाना कई बच्चे आते हैं, लेकिन उनमें से कई तरह-तरह के नशे के आदी हो चुके हैं। इनमें सुलेशन (सॉल्यूशन), गांजा, शराब, बीड़ी, गुटखा और तंबाकू जैसी चीजें शामिल हैं। सुलेशन के बारे में आप जानते ही होंगे–वही व्हाइटनर, जिसे गलत लिखे हुए शब्दों को मिटाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। बच्चे इसे नशे के लिए बुक स्टोर से खरीदकर कपड़े में डालकर सूंघते हैं। इसके अलावा, जब आप साइकिल की दुकान पर जाते हैं, तो देखा होगा कि पंचर जोड़ने के लिए मैकेनिक पीले रंग का सॉल्यूशन लगाते हैं। बच्चे अब इस ट्यूब सॉल्यूशन को भी नशे के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। जब पत्रकारों ने पूछा कि बच्चों को शराब कहां से मिलती है, जबकि सरकारी नियमों के अनुसार उन्हें शराब बेचना गैरकानूनी है, तो एक बच्चे ने बताया कि शाम के वक्त जब लोग पार्क में शराब पीने आते हैं, तो बच्चे उनके आस-पास घूमते हैं और शराब मांगते हैं। अधिकतर लोग उन्हें देने से मना कर देते हैं, लेकिन

कुछ लोग यह सोचकर दे देते हैं कि उनकी बची हुई शराब फेंकने से अच्छा है किसी को दे दें। माता-पिता को इस बारे में पता चलने पर वे बच्चों को डांटते और पीटते भी हैं, लेकिन इसके बावजूद बच्चे इस आदत को छोड़ नहीं पा रहे हैं। जब पत्रकारों ने बच्चों से पूछा कि इस बात पर कैसे यकीन किया जाए कि वे सच में नशा कर रहे हैं, तो बच्चों ने खुद उन्हें उन जगहों पर ले जाकर दिखाया, जहां वे सुलेशन सूंघ रहे थे। वहां 8 से 17 साल तक के बच्चे मौजूद थे, जो इस लत में फंस चुके हैं। बच्चों ने बताया कि उनकी बस्तियों में ऐसे कई दोस्त हैं जो पहले से ही नशे के आदी थे। उनके साथ रहने के कारण वे भी इस लत में पड़ गए। अब स्थिति यह हो गई है कि जो बच्चे नशा छोड़ना चाहते हैं, वे भी इस आदत से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बिना सूचना की कार्रवाई से मचा हड़कंप, कामकाजी बच्चों की दिनचर्या हुई प्रभावित

बातूनी रिपोर्टर आशिक व रिपोर्टर साबेरुल

वजीराबाद धानी, सेक्टर 52 में उस समय अफरा-तफरी मच गई जब एक जमीन मालिक ने अपनी जमीन पर बिना अनुमति बनी इमारतों को खाली कराने की मांग की। इस जमीन पर कुछ लोगों ने मालिक की जानकारी के बिना निर्माण कर लिया था। जैसे ही असली मालिक को इस बात की खबर मिली, वह खुद मौके पर पहुंचे और इमारतों को खाली करने का निर्देश दिया। इस अचानक हुई कार्रवाई से इलाके में तनाव की स्थिति बन गई। इस घटनाक्रम का सबसे ज्यादा असर उन आम लोगों और बच्चों पर पड़ा, जो रोजमर्रा के काम के लिए बाहर निकले थे। सड़क पर भारी भीड़ और अव्यवस्था के कारण ट्रैफिक ठप हो गया। काम पर जाने वाले लोग रास्ते में फंस गए, कई अपने काम पर समय से नहीं पहुंच पाए, और कुछ को तो छुट्टी भी लेनी पड़ी। इलाके के निवासियों ने बताया कि यह कार्रवाई रमजान के पवित्र महीने में की गई, जब लोग पहले ही उपवास की स्थिति में होते हैं और गर्मी से जूझ रहे होते हैं। ऐसे में यह तनावपूर्ण माहौल उनके लिए मानसिक और शारीरिक रूप से काफी थका देने वाला साबित हुआ। रोजेदारों को खासतौर पर बहुत तकलीफ हुई। इस पूरे घटनाक्रम का असर बच्चों पर भी गंभीर रूप से पड़ा। कई बच्चों को अपना स्कूल छोड़ना पड़ा क्योंकि उनके परिवारों को अचानक ठिकाना बदलना पड़ा। कुछ बच्चों को घर का सामान पैक करने और शिफ्ट करने जैसे मुश्किल कामों में मदद करनी पड़ी। यह बदलाव न सिर्फ शारीरिक रूप से कठिन था, बल्कि बच्चों को उनके दोस्तों और पड़ोसियों से भी अलग कर गया, जिससे वे भावनात्मक

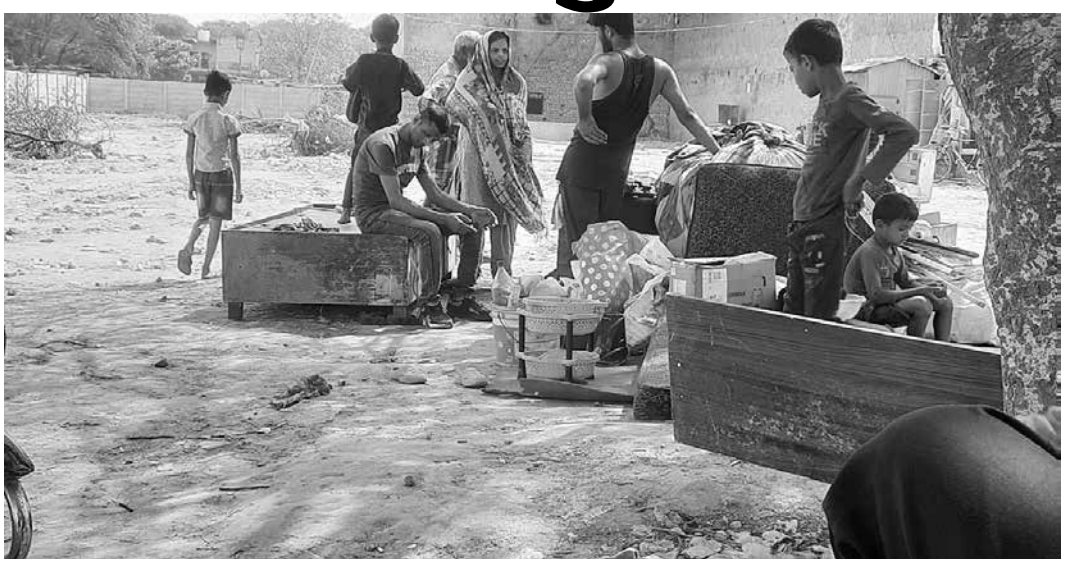

रूप से भी प्रभावित हुए। पूरे दिन इलाके में हलचल बनी रही। लोग इस घटना को लेकर लगातार चर्चा करते रहे, कुछ ने इसे जरूरी कदम बताया तो कुछ ने इसे अन्यायपूर्ण करार दिया। लेकिन एक बात साफ है की इस पूरी कार्रवाई ने आम नागरिकों, खासकर बच्चों और रोजदारों के जीवन में अनचाही मुश्किलें खड़ी कर दीं।

बढ़ते कदम लीडर की समझदारी ने बचाई मासूम की जिंदगी

बातूनी रिपोर्टर- सुमन और विक्की
बालकनामा रिपोर्टर- रितिका

गुरुग्राम के चक्करपुर इलाके में करीब एक हफ्ते पहले एक पांच साल की बच्ची के खो जाने की खबर सामने आई थी। यह बात चेतना संस्था से जुड़े दो बच्चों एवं बढ़ते कदम लीडर; सुमन और विक्की, को पता चली। उस दिन जब वे दोनों पार्क से घर लौट रहे थे, तो रास्ते में उन्होंने एक छोटी बच्ची को अकेले और रोते हुए देखा। दोनों बच्चे तुरंत उसके पास गए और बात करने की कोशिश की। उन्होंने उसका नाम और घर के बारे में पूछा, लेकिन बच्ची डर के मारे कुछ भी नहीं बोल पा रही थी। थोड़ी देर बाद उसने धीरे-धीरे बताया कि वह पांच साल की है हालाँकि बच्ची डरी हुई थी और उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। सुमन और विक्की ने सोचा कि वे उसे पुलिस स्टेशन ले जाएंगे ताकि उसकी मदद हो सके। तभी पास में ही एक महिला रोते हुए दिखाई दी, जो किसी को ढूंढ रही थी। जैसे ही वह बच्ची के पास आई, वह उसे देखकर रोते हुए गले से लगा लिया। महिला ने बताया कि वह उस बच्ची की मां है। सुमन और विक्की ने उसे पहचान की पुष्टि करने को कहा। महिला ने अपने फोन में बच्ची की कुछ तस्वीरें दिखाईं। बच्ची ने उन्हें देखा और सिर हिलाकर हामी भरी।

इसके बाद उस महिला ने दोनों बच्चों को बहुत धन्यवाद कहा और अपनी बेटी को लेकर घर चली गई।

इस घटना ने यह दिखा दिया कि सड़क और काम करने वाले बच्चे भी समझदार होते हैं और मुश्किल समय में मदद के लिए आगे आते हैं। सुमन और विक्की ने जो किया, वह बहुत ही सराहनीय था।

चमकते त्योहारों के पीछे छिपी बाल मजदूरी की कड़वी हकीकत

बालकनामा रिपोर्टर : दामिनी, बातूनी रिपोर्टर : कमल

जयपुर अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और भव्य त्योहारों के लिए मशहूर है। लेकिन इन रंगीन उत्सवों की चमक के पीछे 'बाल श्रम' रूपी एक कड़वी सच्चाई छुपी हुई है।दीपावली, तीज, गणगौर, ईद और अन्य बड़े त्योहारों के दौरान शहर की सड़कों पर काम करने वाले बच्चों की संख्या बढ़ जाती है। ये मासूम बच्चे, जिन्हे इस उम्र में स्कूल में होना चाहिए था, फुटपाथ पर खिलौने, फूल, गुब्बारे और सजावटी सामान बेचते हुए दिखाई देते हैं। हाल ही में बालकनामा रिपोर्टर दामिनी ने जयपुर की विभिन्न बस्तियों

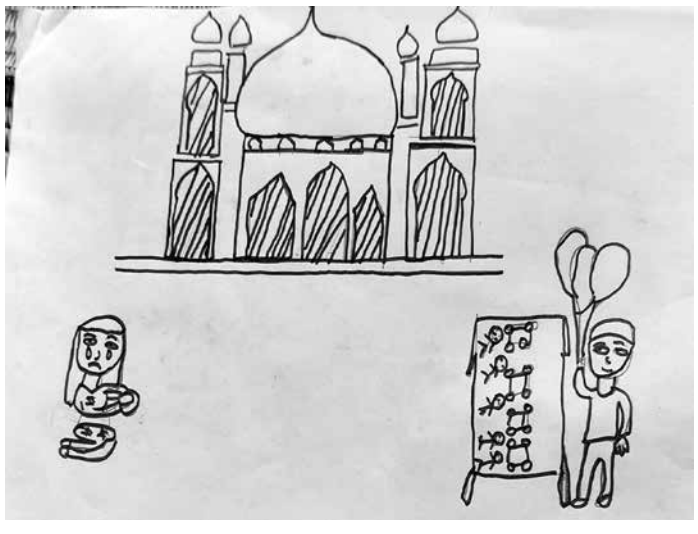

का दौरा किया। उन्होंने आमानिशा दरगाह के बाहर और गणगौर पर्व के दौरान जयपुर की सड़कों पर बच्चों को खिलौने और अन्य सामान बेचते हुए देखा। दामिनी ने कुछ बच्चों से बातचीत कर उनके अनुभव जानने की कोशिश की। 11 वर्ष की बालक विमल (परिवर्तित नाम) ने बताया, "ईद के त्योहार पर हम मस्जिदों के बाहर खिलौने बेचते हैं और कई बार भीख भी मांगते हैं। हमें यह अच्छा नहीं लगता, लेकिन घर वाले मजबूर करते हैं। बदले में कभी पैसे मिलते हैं तो कभी खाने-पीने का कुछ सामान।" विमल ने आगे कहा, "ईद के वक्त मस्जिदों के बाहर भारी भीड़ होती है। हम बच्चे वहीं भीड़ में खिलौने बेचते हैं, भीख मांगते हैं, और कई बार घर भी नहीं लौटते। सड़क किनारे ही सो जाते हैं इस उम्मीद में कि अगले दिन कुछ पैसे और मिल जाएंगे।" इसी तरह 12 साल की बालिका सहर (परिवर्तित नाम) ने भी अपनी कहानी साझा की और कहा, "मुझे भीख मांगना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता बल्कि शर्म आती है। कई बार लोग हमारे बारे में गलत बातें करते हैं, बुरी नजर से देखते हैं, और बुरा बर्ताव भी करते हैं। गर्मी और तेज धूप में सड़क किनारे बैठना पड़ता है। लेकिन यही हमारी मजबूरी है। हमारे लिए त्योहारों का मतलब बस पेट भर खाना और कुछ पैसे इकट्ठे करना होता है।" त्योहारों की चमक-धमक के बीच बाल मजदूरी की यह तस्वीर बेहद चिंता का विषय है। समाज और परिवारों को मिलकर ठोस कदम उठाने होंगे ताकि हर बच्चा स्कूल जा सके और उसका बचपन सुरक्षित और उज्ज्वल बन सके।

डायपर की गंदगी से बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ा रहा बुरा असर

बातूनी रिपोर्टर वीरा व
रिपोर्टर किशन

नोएडा, दिल्ली, गुड़गांव व हरियाणा जैसे क्षेत्रों में अनेक लोग अपने गांवों से काम की तलाश में आते हैं। ये लोग जहां भी उन्हें कोई झुग्गी या छोटा कमरा मिल जाता है, वहीं अपना जीवन यापन शुरू कर देते हैं। अधिकतर लोग झुग्गियों या किराए के छोटे मकानों में रहते हैं। हाल ही में जब कुछ बालकनामा पत्रकार नोएडा की कुछ बिल्डिंगों में पहुंचे, तो उन्होंने ऐसी स्थिति देखी कि उन्हें वहां रह रहे बच्चों से बातचीत करनी पड़ी। एक 12 वर्षीय बालिका रूबी (परिवर्तित नाम) ने पत्रकारों को बतायाः

"हम जिस बिल्डिंग में रहते हैं, उसमें लगभग 40 से ज्यादा कमरे हैं। ये चार मंजिला इमारत है। हर मंजिल के कोनों में छोटे-छोटे गहरे कूड़ेदान बनाए गए हैं। पूरी बिल्डिंग में कुल 6 कूड़ेदान हैं।"

बालिका ने आगे बताया कि बिल्डिंग में रहने वाले सभी लोग अपना घरेलू कचरा जैसे दूध की थैलियां, प्लास्टिक, गत्ता आदि इन्हीं कूड़ेदानों में डालते हैं। लेकिन बड़ी समस्या तब होती है जब लोग छोटे बच्चों के इस्तेमाल किए हुए गंदे डायपर भी बिना ढंके सीधे इन्हीं कूड़ेदानों में फेंक देते हैं। बिल्डिंग की एक और समस्या यह है कि इसका कोई गेट नहीं है। चारों तरफ से खुला होने के कारण कोई भी दिन-रात अंदर आ-जा सकता है। रात के समय अक्सर आवारा कुत्ते बिल्डिंग में घुस आते हैं और कूड़ेदानों से गंदे डायपर निकालकर पूरे परिसर और आसपास की गलियों में फैला देते हैं। सुबह जब बच्चे और लोग बाहर निकलते हैं तो हर जगह गंदगी फैली रहती है। गंदे डायपर से बदबू आती है, जिसमें बच्चों का मल भी लगा होता है। जीने (सीढ़ियों) पर चढ़ते-उतरते समय गंदगी पैरों में लग जाती है। जब कोई सफाई करने के लिए कहता है तो सभी अपना पल्ला झाड़ लेते हैं, कहते हैं कि "हमने तो नहीं फेंका, हम क्यों साफ करें?" बच्चों ने बताया कि इस गंदगी के कारण कई बच्चे बीमार पड़ रहे हैं। इतनी बदबू और गंदगी के माहौल में रहना मुश्किल हो गया है। यहाँ तक कि कभी तो भोजन करना भी दूभर हो जाता है।

गहराता जल संकटः झुग्गी बस्तियों में पानी के लिए जद्दोजहद

बालकनामा रिपोर्टर - राज किशोर, गुरुग्राम
बातूनी रिपोर्टर - अशरफ

गर्मी का मौसम जैसे-जैसे तेज होता जा रहा है, गुरुग्राम की झुग्गी बस्तियों में पानी का संकट और भी गहराता जा रहा है। बालकनामा के रिपोर्टर राज किशोर ने जब इन बस्तियों का दौरा किया, तो पाया कि लगभग हर इलाके में लोग पानी की भारी कमी से जूझ रहे हैं। पीने, नहाने, शौच और अन्य जरूरी कामों के लिए भी पर्याप्त पानी उपलब्ध नहीं है।

निवार्णा कंट्री इलाके से बातूनी रिपोर्टर अशरफ ने बताया, "भैया, यहां जब लाइट कट जाती है, तो मोटर नहीं चलती और पानी मिलना बंद हो जाता है। गर्मियों में जब पानी की सबसे ज्यादा जरूरत होती है, तब बिजली न होने से हम कई घंटे पानी के इंतजार में ही बर्बाद कर देते हैं।"

अशरफ ने आगे बताया, "कभी-कभी तो सुबह से ही बिजली नहीं आती। ऐसे में हम लोग जल्दी उठकर दूर-दराज इलाकों से पानी लाने निकलते हैं। जहां पानी मिलता है, वहां लंबी-लंबी लाइनें लगी होती हैं। घंटों इंतजार करना पड़ता है, जिससे बाकी सारे काम, यहां तक कि पढ़ाई भी प्रभावित होती है।"

अशरफ ने बताया कि कभी-कभी वाटर सप्लाई का टैंकर जरूर आता है, लेकिन उसमें भी पानी सीमित होता है। "वो टैंकर कुछ ही देर में खाली हो जाता है और सभी लोगों को उनके हिस्से का पानी नहीं मिल पाता। यही हाल पास की दूसरी झुग्गी बस्तियों का भी है," उन्होंने कहा। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए अशरफ कहते हैं, "हमारे परिवार में सात लोग हैं, ऐसे में पानी की जरूरत भी ज्यादा होती है। लेकिन हम एक बार में कितना पानी ला सकते हैं? हमारे पास न तो साधन हैं और न ही कोई स्थायी समाधान।"

यह जल संकट सिर्फ पानी की किल्लत नहीं, बल्कि लोगों की दिनचर्या, स्वास्थ्य और बच्चों की शिक्षा पर भी गहरा असर डाल रहा है। ऐसे में यह सवाल उठना लाजिमी है झ इस गंभीर समस्या का समाधान कब और कैसे निकलेगा?

हुनर और हौसले ने गढ़ी जीत की नई राह

बातूनी रिपोर्टर जीत,
बालकनामा रिपोर्टर रितिका

चेतना संस्था से जुड़ा 13 साल का जीत एक ऐसा बच्चा है जिसकी कहानी सुनकर किसी का भी दिल छू जाए। जीत का परिवार पश्चिम बंगाल से रोजी-रोटी की तलाश में गुरुग्राम आया था। नए शहर में सब कुछ अजनबी था, और जीत दिनभर इधर-उधर घूमता रहता था। पढ़ाई से उसका कोई नाता नहीं था, न ही वह हिंदी पढ़ना जानता था। ऐसे ही एक दिन उसकी मुलाकात चेतना की एक सामाजिक कार्यकर्ता से हुई, जिन्होंने न सिर्फ उसे समझा बल्कि उसे सेंटर आने के लिए प्रोत्साहित भी किया। वहीं से जीत की ज़िंदगी ने एक नई दिशा ली। जीत के मामाजी की कबाड़ी की दुकान है, और वहीं से वह टूटे-फूटे सामान लेकर कुछ नया बनाने की कोशिश करता है। पंखा, स्पीकर, खिलौने–कबाड़ से उसने न जाने क्या-क्या बना डाला, वो भी बिना किसी ट्रेनिंग के। वो कहता है, "मैं देख-देखकर और कोशिश करते-करते खुद सीख गया।" उसकी ये जिज्ञासा और हाथों का हुनर देखकर सभी उसकी खूब तारीफ करते हैं। जब भी जीत अपने बनाए मॉडल क्लास में लाता है, सब बच्चे उत्साहित हो जाते हैं। अब जीत पढ़ाई में भी अच्छा कर रहा है।

वो खुद कहता है, 'पहले मुझे हिंदी पढ़नी नहीं आती थी, लेकिन अब मैं पढ़ भी लेता हूँ और लिख भी लेता हूँ।' उसकी छोटी बहन भी अब धीरे-धीरे कुछ नया सीख रही है। जीत भी मानता है कि पढ़ाई जरूरी है और वह आगे भी इसे जारी रखेगा।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बढ़ते कदम से अपने सपनों के लिए खुद आगे बढ़ते बच्चे

बातूनी रिपोर्टर राखी व
रिपोर्टर किशन

आपने अब तक बस की टिकट, ट्रेन की टिकट, पार्क की टिकट एवं मेले आदि की टिकट के बारे में सुना और देखा होगा, और जब भी आप ऐसे स्थानों पर पहुंचते हैं, तो आपको इन टिकटों का इस्तेमाल करना पड़ता है। लेकिन क्या आप बढ़ते कदम संगठन की टिकट के बारे में जानते हैं? आज हम आपको बढ़ते कदम संगठन की टिकट के बारे में जानकारी देंगे, कि यह कैसे कटती है और इसके क्या लाभ हैं। बढ़ते कदम संगठन की सदस्यता हेतु 5 की टिकट होती है, जिसे बढ़ते कदम के बच्चे बढ़ते कदम की पर्ची के नाम से पुकारते हैं। यह पर्ची एक बार हर महीने बढ़ते कदम के सदस्यों द्वारा कटवाई जाती है, और इसके कटवाने के बाद व्यक्ति बढ़ते कदम का सदस्य बन जाता है। इन पर्चियों से एकत्रित धन बढ़ते कदम के नाम से जमा होता हैं, और यह पैसे तब इस्तेमाल किए जाते हैं जब बालकनामा द्वारा बच्चों की समस्याओं को उजागर किया जाता है। अगर कोई अन्य संस्था उस समय मदद नहीं करती है, तो बालकनामा के पत्रकार इन पैसों से बच्चों की मदद करते हैं। साथ ही, जब कहीं पर प्राकृतिक आपदाएँ , लड़ाई-झगड़े या आग लगने जैसी समस्याएं आती हैं, तो बालकनामा और चेतना संस्था के कार्यकर्ता इन पैसों से उन बच्चों तक मदद पहुंचाते हैं। हर महीने जब बच्चे पर्ची कटवाते हैं, तो वे बहुत खुश होते हैं। एक 15 वर्ष की बालिका रोमा (परिवर्तित नाम) ने बढ़ते कदम की पर्ची कटवाकर अपनी खुशी व्यक्त की और कहा, 'मैं खुद गरीब घर से हूं, और जब आसपास के लोग हमें चीजें, कपड़े आदि देकर हमारी मदद करते हैं, तो हमें बहुत खुशी होती है। हम खुशी-खुशी इसे स्वीकार करते हैं, लेकिन मेरी इच्छा है कि मैं खुद उन बच्चों की मदद करूं, जिनकी स्थिति ठीक नहीं है और जो परेशान हैं। मुझे यह सवाल आता है कि उनकी मदद करने के लिए बहुत पैसे चाहिए, पर हमारे पास इतने पैसे कहां हैं। लेकिन जब मैं बढ़ते कदम की 5 की पर्ची हर महीने कटवाती हूं, तो मुझे खुशी होती है कि मैं अपनी छोटी सी मदद से कुछ अच्छा कर पा रही हूं।' अब आपके मन में सवाल आ रहे होंगे, 'क्या हम भी पर्ची कटवाकर बच्चों की मदद कर सकते हैं?' इस पर्ची को केवल बढ़ते कदम से जुड़े बाल साथी ही कटवाते हैं, लेकिन आप भी बालकनामा में प्रकाशित ईमेल पर हमें सन्देश भेज कर सड़क एवं कामकाजी बच्चों की मदद कर सकते हैं।

आर्थिक तंगी के कारण देर रात तक फूल बेचने को मजबूर बचपन

रिपोर्टर किशन

पेट भरने की जद्दोजहद में दो रोटियों के लिए सड़क और कामकाज में जुटे बच्चे दिन-रात मेहनत करते हैं। नोएडा सेक्टर 18 की मार्केट में जब बालकनामा पत्रकार ने एक 17 वर्षीय बालिका से, जो फूल बेच रही थी, उसके जीवन की परिस्थितियों के बारे में पूछा, तो उसने अपनी कहानी साझा की। बालिका सुमन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उनके परिवार में आठ सदस्य हैं–चार बहनें, दो भाई और माता-पिता। वह बहनों-भाइयों में तीसरे नंबर पर आती है। उनका पूरा परिवार सेक्टर 18 की बस्ती में किराए के एक छोटे से घर में रहता है और सभी फूल बेचने का काम करते हैं।

वह बताती है कि वे सुबह 11 बजे से मार्केट में आ जाते हैं और रात के 2 बजे तक फूल बेचते हैं। जब पत्रकारों ने इतनी देर तक काम करने की बात सुनी, तो वे काफी चिंतित हो उठे। उन्होंने पूछा कि आखिर उन्हें इतनी रात तक क्यों रुकना पड़ता है।

इस पर लड़की ने बताया, "यहाँ आसपास कई बड़े मॉल हैं, जहाँ रात को भीड़ ज्यादा होती है। दिन के मुकाबले रात में फूल बेचने की संभावना ज्यादा रहती है।" फिर उसने अपने घर की आर्थिक मजबूरियों का भी ज़िक्र किया। "हम जो कमाते हैं, वह घर के खर्चों में चला जाता है। पिताजी के कंधों पर चार बेटियों की जिम्मेदारी है। शादी के लिए भी पैसे चाहिए, पर उनकी कमाई इतनी नहीं है कि सबकुछ अकेले संभाल सकें। इसलिए हमें भी काम करना पड़ता है।"

वह आगे कहती है, "कई बार रात को जब लोग हमें इतने देर तक मेहनत करते हुए देखते हैं, तो भले फूल न खरीदें, लेकिन कुछ पैसे दे ही जाते हैं। और यही पैसे हमारे घर का सहारा बनते हैं।"

सरकारी योजना के तहत मिली साइकिल से शिक्षा और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ा कदम

बालकनामा रिपोर्टर : दीपक,
बातूनी रिपोर्टर : नेहा

बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने सड़क और कामकाजी बच्चों की समस्याओं, उपलब्धियों और उनके पारिवारिक एवं शैक्षिक अनुभवों को जानने के लिए जयपुर की मांग्यावास बस्ती का दौरा किया। इस दौरान 15 साल की बालिका नेहा ने अपनी कहानी साझा की। वह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मांग्यावास में कक्षा 9 में पढ़ाई कर रही है। उसने बताया कि पिछले महीने सरकारी योजना के तहत 9वीं कक्षा की छात्राओं को साइकिल वितरित की गई, और उसे विद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा एक साइकिल उपहार स्वरूप दी गई। साइकिल मिलने के बाद, नेहा ने महसूस किया कि अब उसके व्यक्तिगत कार्य जल्दी हो जाते हैं, जिससे समय की भी बचत हो रही है। नेहा का कहना था कि उसके पिता की एक प्रेस दुकान है, और उसका काम कपड़े लाकर और प्रेस किए हुए कपड़े वापस पहुंचाने का है। पहले वह यह काम पैदल करती थी, जो दूर-दूर तक जाना पड़ता था, लेकिन अब साइकिल मिलने के बाद यह काम आसान हो गया है। एक साथ बहुत सारे कपड़े साइकिल में लाने में सक्षम होने के कारण, उसका काम जल्दी निपटने लगा है और अब उसे पढ़ाई के लिए भी समय मिल जाता है। इसके अलावा, उनके घर और दुकान के बीच की दूरी बहुत है, इसलिए जब भी घर में किसी सामान की आवश्यकता होती है, वह साइकिल से तुरंत जा सकती है। नेहा ने कहा, "साइकिल मिलने से ऐसा लगता है कि यह मेरे लिए बहुत उपयोगी साबित हो रही है। यह सरकारी योजना का एक बहुत अच्छा उपहार है।" नेहा ने आगे कहा कि वह 12वीं कक्षा में अच्छे अंक लाने का प्रयास करेगी ताकि वह सरकार की योजना के तहत स्कूटी प्राप्त कर सके। वह चाहती है कि वह इस प्रतिस्पर्धा के युग में खुद के लिए एक जगह बना सके। अपने परिवार के बारे में उसने बताया कि उसके माता-पिता बहुत गरीब हैं और उसके तीन छोटे भाई-बहन हैं। परिवार में बड़ी बेटी होने के नाते, उसका सपना है कि वह अपने परिवार को आर्थिक रूप से संबल प्रदान कर सके। वास्तव में, सरकारी योजनाओं का यह सकारात्मक प्रभाव बालिकाओं को शिक्षा के प्रति प्रेरित कर रहा है, जिससे उन्हें अपने सपनों को साकार करने का मौका मिल रहा है।

परिवार की परेशानियों का बोझ उठाता नन्हा कंधा

बातूनी रिपोर्टर रमेश व
रिपोर्टर किशन

सड़क और कामकाजी बच्चे अक्सर अपने छोटे-छोटे सपनों को पूरा करने के लिए अपने माता-पिता के साथ मिलकर विभिन्न कार्यों में जुट जाते हैं। हाल ही में जब 'बालकनामा' के पत्रकार नोएडा की सड़कों का दौरा कर रहे थे, तो उनकी मुलाकात एक 14 वर्षीय बालक शाहिद (परिवर्तित नाम) से हुई, जो अपनी छोटी सी रेहड़ी के साथ कबाड़ बीनने में लगा था। पत्रकारों ने उससे बातचीत की और उसके जीवन की कहानी जानने का प्रयास किया। बालक ने बताया कि वह अपने माता-पिता और दो भाइयों के साथ नोएडा की किराए की बस्तियों में पिछले छह वर्षों से रह रहा है। उसके बड़े भाई को नशे की लत लग गई है, जिसे छुड़ाने के लिए माता-पिता ने कई प्रयास किए, लेकिन असफल रहे। इलाज में काफी पैसा खर्च हो जाने के कारण घर की आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो गई कि वह स्कूल की फीस भी नहीं भर सके। पहले वह स्कूल जाया करता था, लेकिन हालात बिगड़ने के बाद उसे पढ़ाई छोड़नी पड़ी। अब वह हर सुबह कबाड़ बीनने निकल जाता है और जो भी कमाई होती है, वह माता-पिता को देकर घर चलाने में मदद करता है। फिर उसके पिता उस कबाड़ को बेचकर घर के खर्चे पूरे करते हैं। बालक की आँखों में फिर भी उम्मीद की चमक थी। उसने बताया कि उसके पिता वादा करते हैं कि कुछ वर्षों में वे उसे किसी हॉस्टल में दाखिला दिलवाएंगे, ताकि वह फिर से पढ़ाई कर सके और अपने सपनों को पूरा कर सके। वास्तव में यह खबर उन अनगिनत बच्चों की सच्चाई को प्रकाशित करती है, जो विपरीत परिस्थितियों के बावजूद उम्मीद का दामन थामे संघर्ष कर रहे हैं।

पानी की किल्लत से बढ़ी बच्चों की परेशानियाँ

बालकनामा रिपोर्टर : दामिनी
बातूनी रिपोर्टर : नेहा

जयसिंहपुरा खोर के बच्चों को इस भीषण गर्मी के मौसम में पानी जैसी बुनियादी सुविधा से वंचित होना पड़ रहा है। कुछ समय पहले मीठे पानी की पाइपलाइनें बिछाई गई थीं, जिससे बच्चों के चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ पड़ी थी, क्योंकि उन्हें पानी के लिए अब संघर्ष नहीं करना पड़ेगा, लेकिन यह राहत महज दो महीने तक ही सीमित रही। अब फिर से पानी की समस्या उभर आई है। हर दिन, तेज धूप में मासूम बच्चे बस्ती के बाहर लगे बोरिंग से पानी भरने के लिए जाते हैं। जब बालकनामा रिपोर्टर ने उनसे पूछा कि क्या वे शाम को पानी भरने का काम नहीं कर सकते, तो तेज धूप में पानी भरकर लाने का काम क्यों करते हो, तो 14 वर्षीय बालिका नेहा ने बताया, "धूप में लोग कम होते हैं, और अगर हम सुबह या शाम पानी भरने जाते हैं तो हमें लंबी लाइन में लगना पड़ता है, कभी नंबर भी नहीं आता, या फिर जल्दी पानी भरने को लेकर झगड़े हो जाते हैं। इसलिए हम धूप में पानी भरते हैं, ताकि आसानी से नंबर आ जाए।" दूसरी बालिका करिश्मा ने कहा, "यह वजन उठाना और नंगे पैर धूप में चलना हमारी आदत बन गई है, और अगर हम पानी नहीं भरेंगे तो गर्मी में काम कैसे चलेगा?" राहुल ने बताया कि बस्ती में एक पानी का टैंकर आता है, जो एक बर्तन के 20 रुपए लेता है, लेकिन वह भी अब कभी-कभी ही आता है। बस्ती के लोग कई बार प्रशासन से नियमित पानी की आपूर्ति की मांग कर चुके हैं, लेकिन आज तक कोई स्थायी समाधान नहीं हो सका। गर्मी के इस मौसम में जब डिहाइड्रेशन, लू, स्ट्रोक, और त्वचा जलने जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है, ऐसे में इन बच्चों की पानी की परेशानी बेहद चिंताजनक है।

गरीबी और चुनौतियों के बीच पलती उम्मीद की चेतना

बातूनी रिपोर्टर परी व रिपोर्टर किशन

गरीबी, जीवन में आगे न बढ़ने का एक बहुत बड़ा कारण है, जो इंसान को उसके सपनों को पूरा करने से रोकता है। यह इंसान को लगातार समस्याओं से घेर लेती है, और एक गरीब व्यक्ति हमेशा संसाधनों की कमी से जूझता है। ऐसे लोग, जो गरीब होते हैं, उन्हें उन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिनका सामना संपन्न लोग नहीं करते। गरीबी के कारण, गरीबों को मानसिक और शारीरिक समस्याओं का भी सामना अधिक करना पड़ता है। हाल ही में, दिल्ली में रहने वाली एक 10 वर्षीय बालिका मधु (परिवर्तित नाम) से उसकी कहानी जानने का अवसर मिला, और इसके बाद गरीबी के प्रभाव को महसूस करना और भी जरूरी हो गया। मधु ने बताया कि, "मैं अब 10 साल की हूं, और हमारा परिवार दिल्ली में पिछले 11-12 सालों से रह रहा है। हमारे घर में तीन सदस्य हैं झ मेरी दो बहनें और मेरी माता। आप सोच रहे होंगे कि पिताजी कहां हैं? पिताजी हमारे साथ नहीं हैं। पिताजी इस दुनिया में हैं, लेकिन उनकी सोच बदल गई है। जब पिताजी हमारे साथ रहते थे, तो

हम बहुत खुश रहते थे। घर में छोटी-छोटी चीजों से भी हमें खुशी मिलती थी, लेकिन पिताजी के जाने के बाद हमारा जीवन बहुत कठिन हो गया है। अब मेरी मां कोठियों में काम करने जाती हैं, और हम अपनी नानी के पास रहते हैं। नानी दिनभर हमारी देखभाल करती हैं। पिताजी अब हमें बिल्कुल भी नहीं पूछते, न ही हमारे खर्चे के लिए कोई मदद करते हैं।"

उसने आगे कहा, "पिताजी के जाने से पहले, मेरी मां घर पर काम करती थीं, लेकिन अब उन्हें कोठियों में काम करना पड़ता है। जो पैसा मिलता है, उससे घर का खर्च चलता है, लेकिन जब हमें कपड़े, खिलौने, किताबें आदि खरीदने होते हैं, तो हमें हजार बार सोचना पड़ता है। कभी-कभी तो एक पेंसिल या किताब तक खरीदने के लिए भी हमें पैसे नहीं होते। लेकिन अब हमें खुशी है कि हम चेतना संस्था के एजुकेशन क्लब जाते हैं, जहां हमारी सभी छोटी-छोटी जरूरतों का ख्याल रखा जाता है। वहां जाकर मुझे अब पिताजी के न होने का एहसास नहीं होता। मुझे बहुत खुशी होती है, क्योंकि वहां मुझे प्यार, देखभाल और शिक्षा दोनों मिलती है।"

अंतरराष्ट्रीय सड़क एवं कामकाजी बच्चों के दिवस के उपलक्ष्य में कबड्डी खेल प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

बालकनामा रिपोर्टर : दीपक,
बातूनी रिपोर्टर : रोहित

अंतरराष्ट्रीय सड़क एवं कामकाजी बच्चों के दिवस के अवसर पर जयपुर की जामडोली बस्ती में "स्ट्रीट चैंप्स स्पोर्ट्स टूनार्मेंट" के तहत कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में जयपुर की विभिन्न बस्तियों में संचालित वैकल्पिक शिक्षा केंद्रों से जुड़े बच्चों ने अपनी आयु वर्ग के अनुसार भाग लिया। कुल चार टीम ने प्रतियोगिता में हिस्सा लिया जिनके नाम थे- कबड्डी केसरी, दमदार धुरंधर, सड़क के सूरमा और दंगल के वीर। यह आयोजन न केवल बच्चों के मनोरंजन और शारीरिक विकास के उद्देश्य से किया गया, बल्कि उन्हें खेलों के माध्यम से टीमवर्क, अनुशासन और आत्मविश्वास जैसे महत्वपूर्ण जीवन मूल्यों से अवगत कराने के लिए भी था। यह प्रतियोगिता सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए खेल के क्षेत्र में पहला अवसर था, जब उन्होंने किसी खेल में भाग लिया। प्रतियोगिता के दौरान बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था। कबड्डी के मैदान में बच्चों ने अपनी पूरी ऊर्जा और जोश के साथ खेला, और उनके चेहरों पर जो चमक थी, वह उनके अनुभवों और खुशियों को बयां कर रही थी। 13 वर्षीय अनिषा ने कहा, "पहली बार लड़कों के साथ कबड्डी खेलना एक नया अनुभव था, लेकिन जब खेलना शुरू किया तो हमने भी पूरी ताकत लगाई।" वहीं, 10 वर्षीय रोहित, जो पहली बार किसी प्रतियोगिता में भाग ले रहा था, ने कहा, "मुझे बहुत अच्छा लगा। पहले डर लग रहा था, लेकिन कुछ दिन पहले से कबड्डी खेलने का अभ्यास किया और खेल मैदान में दोस्तों ने हौसला बढ़ाया तो मैं भी खेल गया। अब रोज कबड्डी खेलना चाहता हूँ।" 12 वर्षीय रेखा ने भी अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा, "हमारे पास खेलने का मौका बहुत कम मिलता है। चेतना संस्था के कार्यकताओं ने जब खेल सिखाया तो हमें बहुत मजा आया। मैं आगे भी खेलना चाहती हूँ।" सड़क एवं कामकाजी बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ खेल की गतिविधियों से जोड़ना बेहद आवश्यक है, ताकि बच्चों में आत्मविश्वास बढ़े और उन्हें भी वह सब अनुभव मिले जो हर बच्चे को मिलता है। इस खेल प्रतियोगिता ने बच्चों को नया अनुभव दिया एवं साथ ही उनके अंदर छिपी संभावनाओं को भी प्रदर्शित किया।

बड़ी उम्मीदों के साथ बोर्ड परीक्षा में भाग लेते नन्हे कदम

बालकनामा रिपोर्टर : दामिनी
बातूनी रिपोर्टर : प्रियंका

बालकनामा रिपोर्टर दामिनी ने हाल ही में जयपुर की विभिन्न बस्तियों का दौरा किया और सड़क और कामकाजी बच्चों से बोर्ड परीक्षा के संदर्भ में उनके अनुभव जानने की कोशिश की। इस दौरान यह जानकारी सामने आई कि "सपनों को साकार करने की जिद और मेहनत की मिसाल पेश करते हुए, कई सड़क और कामकाजी बच्चों ने इस साल पहली बार पांचवी कक्षा की बोर्ड परीक्षा में हिस्सा लिया।" जीवन यापन की जद्दोजहद और शिक्षा में लगातार आने वाली चुनौतियों के बावजूद इन बच्चों ने हार नहीं मानी। स्कूल में नामांकन मिलने के बाद, पढ़ाई के साथ-साथ काम करने की उनकी दिनचर्या बेहद कठिन थी, लेकिन इन नन्हें कदमों ने बड़ी उम्मीदों के साथ परीक्षा में भाग लिया। 11 वर्षीय शाकिर (परिवर्तित नाम), जो परिवार की आर्थिक मदद करने के लिए चाय की दुकान पर काम करता था, अब पढ़ाई को प्राथमिकता देते हुए कहता है, 'मैं स्कूल जाकर बहुत खुश हूं। पहले लगता था पढ़ाई हमारे लिए नहीं, लेकिन अब सपना है कि टीचर बनूं।' प्रिया (परिवर्तित नाम), जो अपनी मां के साथ लाख की चूड़ियों में नग लगाती है, कहती है, 'रात को थक जाती हूं, पर सुबह स्कूल जाना अच्छा लगता है। अब मैं पढ़-लिखकर डॉक्टर बनना चाहती हूं।' इन बच्चों के चेहरों पर मुस्कान और आँखों में उम्मीद साफ दिखती है। यह परीक्षा सिर्फ एक शैक्षणिक मूल्यांकन नहीं, बल्कि उनके आत्मविश्वास और भविष्य की ओर बढ़ते एक अहम कदम का प्रतीक है।

बस्ती में भ्रामक अफवाहों के कारण बच्चों की शिक्षा पर पड़ रहा बुरा असर

बालकनामा रिपोर्टर : दीपक, बातूनी रिपोर्टर : अजय

जयपुर की लखेसरा कच्ची बस्ती इन दिनों गहरी चिंता और भय के माहौल में है। पिछले कुछ हफ्तों से बस्ती में एक डर और अफवाहों का दौर चल रहा है, जिससे पूरे समुदाय में दहशत का माहौल बन गया है। अफवाहों के मुताबिक, एक सात लोगों का गिरोह रात के समय बस्ती में आता है और महिलाओं, किशोरियों व छोटे बच्चों को निशाना बनाता है। यह गिरोह बस्ती में छुपकर रहता है और विशेष तौर पर लड़कियों को अपना शिकार बनाने की कोशिश करता है। इन भ्रामक अफवाहों ने इतनी तेजी से फैलाव लिया है कि लोग अपने घरों की सुरक्षा को लेकर चिंतित हो गए हैं। अब लगभग हर परिवार का एक सदस्य रातभर जागकर घर की निगरानी करता है, और छोटे बच्चे अब अकेले घर से बाहर निकलने में डरते हैं। कई किशोरियाँ और महिलाएँ भी इस डर के कारण घरों से बाहर नहीं जा पा रही हैं। इस भय और तनाव का सबसे बड़ा असर बच्चों की शिक्षा पर हो रहा है। वर्तमान में बच्चों की परीक्षाएँ चल रही हैं, लेकिन अफवाहों के कारण वे स्कूल नहीं जा पा रहे हैं। माता-पिता बच्चों को बाहर भेजने में घबराहट महसूस कर रहे हैं, जिससे न सिर्फ उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है, बल्कि उनका मानसिक स्वास्थ्य भी चिंताजनक हो गया है। अजय, जो 15-16 वर्षों से इस बस्ती में अपने परिवार के साथ रह रहे हैं, बताते हैं कि उन्होंने पहले कभी इस तरह की स्थिति नहीं देखी। उनका कहना है कि यह पूरी तरह से अफवाह है, लेकिन इस अफवाह का असर इतना गहरा हो चुका है कि लोग सच और झूठ में फर्क करना भी भूल चुके हैं। लखेसरा बस्ती में फैल रही ये अफवाहें न सिर्फ समाज में तनाव पैदा कर रही हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ी के शिक्षा और विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल रही हैं। इस भय के माहौल को केवल सही जानकारी और प्रशासन की सक्रियता से ही समाप्त किया जा सकता है, ताकि लोग अफवाहों से बाहर निकलकर एक सामान्य जीवन जी सकें।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए सरदार नगीना सिंह जी और परिवार, एचसीएल फाउंडेशन तथा अजीम प्रेमजी फाउंडेशन का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471